माननीय प्रधानमंत्री जी, नमस्कार। मैं इस अवसर के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी और वैभव आयोजक कि आभारी हूं।

मैने महासागर और जलवायु में अनुसंधान किया है, मुझे लगता है कि आम आदमियों की जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और COVID-19 जैसी महामारी तथा प्राकृतिक आपदाओं को कम करने के लिए इस क्षेत्र में किये गये अनुसंधान की प्रयोग करने की काफ़ी संभावनाएं हैं। हमने ये प्रयोग किया है और इस प्रयोग से मलेरिया जैसे बीमारी का एरलीवार्निंग भी किया है।

गभिर महासागरों तथा ध्रुवीय क्षेत्रों में संसाधनों का पता लगाने और भविष्य की जलवायु को समझने की भी संभावनाएं हैं। विशेष रूप से दक्षिणी महासागर कि मानसून प्रवाह के ऊपर प्रभाव का अध्ययन करने की आवश्यकता है। हम इसे दस साल बीस साल आगे की प्रयोग कर सकते हैं।

माननीय प्रधानमंत्री और जापान के पूर्व प्रधानमंत्री आबे जी के निजी प्रयास से बंधे गये पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय और मेरा संस्थान जामस्टेक कि संबंध को बढ़ाते हुये इस दिशा में और शोध करने कि उम्मीद रखता हूं।

अनुसंधान और इनोवेसोन एक महान राष्ट्र की रीढ़ हैं और विशेष रूप से ये आत्मनिर्भर भारत के लिए जरूरी है। माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में शुरू किए गए उत्कृष्ट अवसरों को जारी रखते हुए, मुझे लगता है कि निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ाना अच्छा होगा (पूँजी के लिए) ।

वैश्विक अनुसंधान सहयोग में मुझे उम्मीद है कि MoES, JAMSTEC, आईआईटी और आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित केंद्रों के साथ चल रहे आदान-प्रदान को बढ़ाते हुये क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों के साथ भी अनुसंधान विनिमय कि प्रयास की जायेगी।

मैं वसुधैव कुटुम्बकम के दर्शन में चलते हुए एक मजबूत भारत की सहयोगियों का हिस्सा बनने की उम्मीद रखता हूं। धन्यवाद। नमस्कार।